International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 6, Issue 4, April 2019
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com, editor@aarf.asia

तहसील सम्भल में भूमि उपयोग एवं नियोजन– एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ0 रीना

प्रस्तावनाः

भूमि उपयोग एक ऐसा आर्थिक प्रक्रम है जिसके द्वारा भूमि को यथाषक्ति रूप में तथा भूमि की प्रकृति के अनुरूप दषाओं का अनुगमन करते हुए विभिन्न प्रकार के उपादानों के लिए प्रयुक्त किया जाता है। यहीं कारण है कि भूमि की प्रकृति एवं उसकी क्षमता का ज्ञान प्राप्त करना समुचित आर्थिक उत्पादन के सन्दर्भ में परम आवष्यक है। वैज्ञानिक दृश्टिकोण से किसी भी क्षेत्र, प्रदेष अथवा देष में भूमि उपयोग के प्रतिरूप का आंकलन करने के लिए सामान्य भूमि का आंकलन करना अति आवष्यक कार्य होता है। कृशि उत्पादन के सन्दर्भ में सिंचाई प्रतिरूप, षस्य प्रतिरूप, षस्य गहनता, षस्य समूहन विष्लेशण तथा कृशि के उपरूपों का अध्ययन जितना महत्वपूर्ण होता है। सामान्य भूमि उपयोग के स्वरूप का आंकलन भी उतना ही उपादेष होता है। भूगोल में ''भूमि उपयोग'' और ''भूमि प्रयोग'' की सूक्ष्म अन्तर के साथ व्याख्या की जाती है। यदि किसी भू–भाग पर मानवीय छाप अंकित है या मानव अपनी–अपनी आवष्यकता के अनुरूप भूमि का उपयोग कर रहा है तो उस भू–भाग के लिए ''भूमि उपयोग'' षब्द अधिक उपयुक्त रहेगा परन्तु यदि कोई भू–भाग मानवीय प्रभावों से अछुता है या इसका प्रयोग प्राकृतिक रूप से हो रहा है तो उस भू–भाग के लिए ''भूमि प्रयोग'' षब्द अधिक उपयुक्त रहेगा। वेनजटी के अनुसार ''भूमि उपयोग प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक उत्पादनों के प्रयोग का प्रतिफल है।

अध्ययन क्षेत्रः

प्रस्तुत षोध–पत्र का अध्ययन क्षेत्र सम्भल तहसील है, इसका विस्तार 28^0, 25′ उत्तर से 28^0, 48′ उत्तरी अंक्षाष और 78^0, 24′ से 78^0, 41′ पूर्वी देषान्तर के मध्य है। सम्भल तहसील का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 904.60 वर्ग किलोमीटर है। तहसील की उत्तरी सीमा अमरोहा तहसील, पूर्वी सीमा तहसील बिलारी, पष्चिमी सीमा हसनपुर तहसील तथा दक्षिणी सीमा तहसील चन्दौसी से निर्धारित होती है।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

प्रषासनिक दृश्टि से 01 तहसील मुख्यालय (सम्भल) 03 विकासखण्ड मुख्यालय सम्भल, असमोली और पवांसा, 23 न्यायपंचायतें और 242 ग्राम पंचायत तथा 403 राजस्व गॉव है। स्थानीय प्रषासन एवं निकायों की दृश्टि से 01 नगर पालिका परिशद (सम्भल) और 01 नगर पंचायत (सिरसी) है। वर्श 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 8.50 लाख व्यक्ति है और जनघनत्व 938 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।

अध्ययन के उद्देष्यः

तहसील सम्भल एक कृशि प्रधान क्षेत्र है। यहॉ की कृशि में भूमि उपयोग का स्थान मुख्य है। तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या के परिणामस्वरूप यहॉ पर कृशि के अन्तर्गत षुद्ध बोए गए क्षेत्र में निरन्तर कमी आ रही है किन्तु तीव्र गति से बढ़ते मषीनीकरण के प्रयोग एवं कृशि क्षेत्र से अतिरिक्त खाद्यान्न उत्पादन की आवष्यकता के कारण कृशि के अन्तर्गत क्षेत्र को यथावत बनाये रखना आवष्यक है। अध्ययन क्षेत्र में कृशि–क्रिया कलापों की विषेशताओं में विशमता के फलस्वरूप भूमि उपयोग में भी विविधता देखने को मिलती है। इसी आधार पर बदलते प्रतिमान के आधार पर भूमि उपयोग का अध्ययन कर प्रभावी रणनीति तैयार कर भविश्य को ध्यान में रखकर नियोजन प्रारूप का प्रस्तुतीकरण किया गया है।

परिकल्पनाः

तहसील सम्भल जैसे कृशि प्रधान क्षेत्र में 80 प्रतिषत जनसंख्या कृशि क्रिया–कलापों में ही संलग्न है। कृशि क्षेत्र में यहॉ पर निरन्तर बदलाव दिखलाई पड़ रहे है। परती, ऊसर, बंजर एवं कृशि अयोग्य भूमि में कमी के परिणामस्वरूप कृशि के अन्तर्गत क्षेत्रफल में बढ़ोत्तरी परिलक्षित हो रही है किन्तु तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या की अपेक्षा कृशि भूमि धीमी गति से बढ़ रही है। सिंचाई साधनों की बढ़ोत्तरी, मषीनीकरण के प्रयोग एवं सरकार की अनुकूल नीतियों के फलस्वरूप भूमि उपयोग में निरन्तर बदलाव दिखलाई पड़ रहा है।

विधि तन्त्रः

प्रस्तुत षोध–पत्र को तैयार करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का सहारा लिया गया है। इसके साथ ही क्षेत्रीय अवलोकन, कृशकों से जानकारी एवं स्थानीय भ्रमण को प्राथमिकता प्रदान की गई है। भूमि उपयोग का वर्गीकरण कर गहनता से अध्ययन किया गया है।

भौगोलिक प्रारूपः

सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र मैदानी भू–भाग है जिसकी औसत ऊॅचाई 190 से 195 मीटर के मध्य है तथा ढाल उत्तर–दक्षिण है। इस क्षेत्र का निर्माण यहॉ पर प्रवाहित होने वाली नदियों की कांप से निर्मित है। सोत यहॉ की मुख्य नदी है। यहॉ की जलवायु मानसूनी है। वार्शिक औसत तापमान 25 डिग्री सेन्टीग्रेट, वार्शिक वर्शा 90 से 95 सेन्टीमीटर, सापेक्षिक आर्द्रता 70 प्रतिषत एवं औसत वायु गति 5.00 किलोमीटर प्रति घन्टा है। यहॉ पर जलोढ़ मिट्टी का विस्तार है जो बांगर एवं खादर क्षेत्रों में विभाजित है। सर्वाधिक भाग पर दोमट मिट्टी पाई जाती है। नदियों के समीपवर्ती क्षेत्र में चिकनी मिट्टी मिलती है। मानसूनी पतझड़ी वृक्षों से युक्त सम्पूर्ण क्षेत्र में 285 हेक्टेयर भूमि पर वनों का विस्तार मिलता है। इसके साथ ही नदियों के तटवर्ती क्षेत्रों में वन्य जीवों की अनेक प्रजातियां देखने को मिलती है।

आर्थिक समीक्षाः

तहसील सम्भल में निवास करने वाली जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय कृशि है तथा पषुपालन द्वितीय कार्य है। इसके साथ ही जनसंख्या का कुछ भाग उद्योगों में भी संलग्न है। सकल प्रतिवेदित क्षेत्रफल के 88 प्रतिषत भाग पर कृशि कार्य किया जाता है तथा 45 प्रतिषत से अधिक भू–भाग दो फसली हैं कुल कार्यषील जनसंख्या का 60 प्रतिषत भाग कृशि कार्य में संलग्न है। कुल राजस्व प्राप्ति में कृशि का योगदान 50 से 55 प्रतिषत है। कृशि के साथ–साथ यहॉ पर पषुपालन का कार्य कर अधिकांष कृशक दुग्ध व्यवसाय कर रोजगार प्राप्त कर रहे है।

भूमि उपयोग प्रारूपः

तहसील सम्भल में सकल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 95105 हेक्टेयर है जिसमें कृशि के अन्तर्गत षुद्ध रूप से बोया गया क्षेत्रफल 87.03 प्रतिषत है। वन, चारागाह, उद्यानों एवं वृक्षों का क्षेत्रफल 0.72 प्रतिषत है। परती भूमि 1.77 प्रतिषत एवं कृशि योग्य बंजर एवं कृशि अयोग्य भूमि का प्रतिषत 0.80 प्रतिषत है। इसके साथ ही कृशि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में लाई गई भूमि 9.68 प्रतिषत हैं। जैसा कि तालिका– से स्पश्ट है।

तालिका संख्या – 01

तहसील सम्भल में भूमि उपयोग प्रारूप, 2016–2017

भूमि उपयोग के वर्ग	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	प्रतिषत
वन, चारागाह, उद्यानों एवं वृक्षों का क्षेत्रफल	685	0.72
कृशि योग्य बंजर क्षेत्रफल एवं कृशि अयोग्य भूमि	760	0.80
परती भूमि	1680	1.77
कृशि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में लाई गई भूमि	9210	9.68
षुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	82770	87.03
सकल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	**95105**	**100**

स्रोतः जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद सम्भल, 2017।

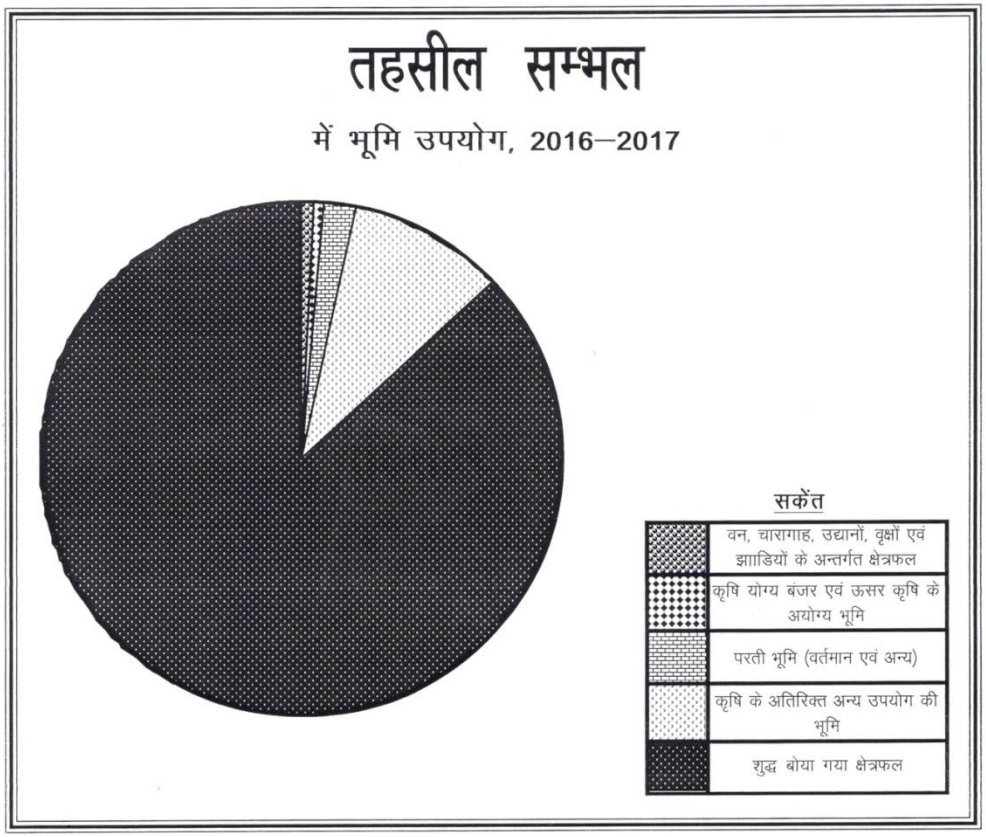

कृशि भूमि उपयोगः

तहसील सम्भल में सकल बोया गया क्षेत्रफल 152050 हेक्टेयर है जिसमें रबी की फसल के अन्तर्गत क्षेत्रफल 65905 (43.34 प्रतिषत) हेक्टेयर, खरीफ फसल के अन्तर्गत क्षेत्रफल 70025 (46.05 प्रतिषत) हेक्टेयर एवं जायद की फसल के अन्तर्गत क्षेत्रफल 16120 (10.61 प्रतिषत) हेक्टेयर सम्मिलित है। विकासखण्ड स्तर पर सर्वाधिक सकल बोया गया क्षेत्रफल 57363 हेक्टेयर पवांसा विकासखण्ड में है जिसमें रबी की फसल 45.50 प्रतिषत, खरीफ की फसल 44.03 प्रतिषत एवं जायद की फसल 10.47 प्रतिषत भाग पर उगाई जाती है। जबकि इसके विपरीत सबसे कम सकल बोया गया क्षेत्रफल 39688 हेक्टेयर विकासखण्ड असमोली में है जिसमें रबी की फसल 40.78 प्रतिषत, खरीफ की फसल 50.28 प्रतिषत एवं जायद की फसल 8.94 प्रतिषत भाग पर उगाई जाती है। जैसा कि तालिका– से स्पश्ट है।

तालिका संख्या – 02

तहसील सम्भल में कृशि भूमि उपयोग का स्वरूप, 2016–2017

क्र0 सं0	विकासखण्ड	रबी की फसल	खरीफ की फसल	जायद की फसल	सकल बोया गया क्षेत्रफल
1–	असमोली	16185	19955	3548	39688
	(प्रतिषत)	(40.78)	(50.28)	(8.94)	(100)
2–	सम्भल	22165	23185	5739	51085
	(प्रतिषत)	(43.38)	(45.38)	(11.24)	(100)
3–	पवांसा	26105	25260	5998	57363
	(प्रतिषत)	(45.50)	(44.03)	(10.47)	(100)
योग ग्रामीण (प्रतिषत)		**64455 (43.51)**	**68400 (46.17)**	**15285 (10.32)**	**148140 (100)**
नगरीय योग (प्रतिषत)		**1450 (37.08)**	**1625 (41.56)**	**835 (21.36)**	**3910 (100)**
योग जनपद (प्रतिषत)		**65905 (43.34)**	**70025 (46.05)**	**16120 (10.61)**	**152050 (100)**

स्रोतः जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद सम्भल, 2017।

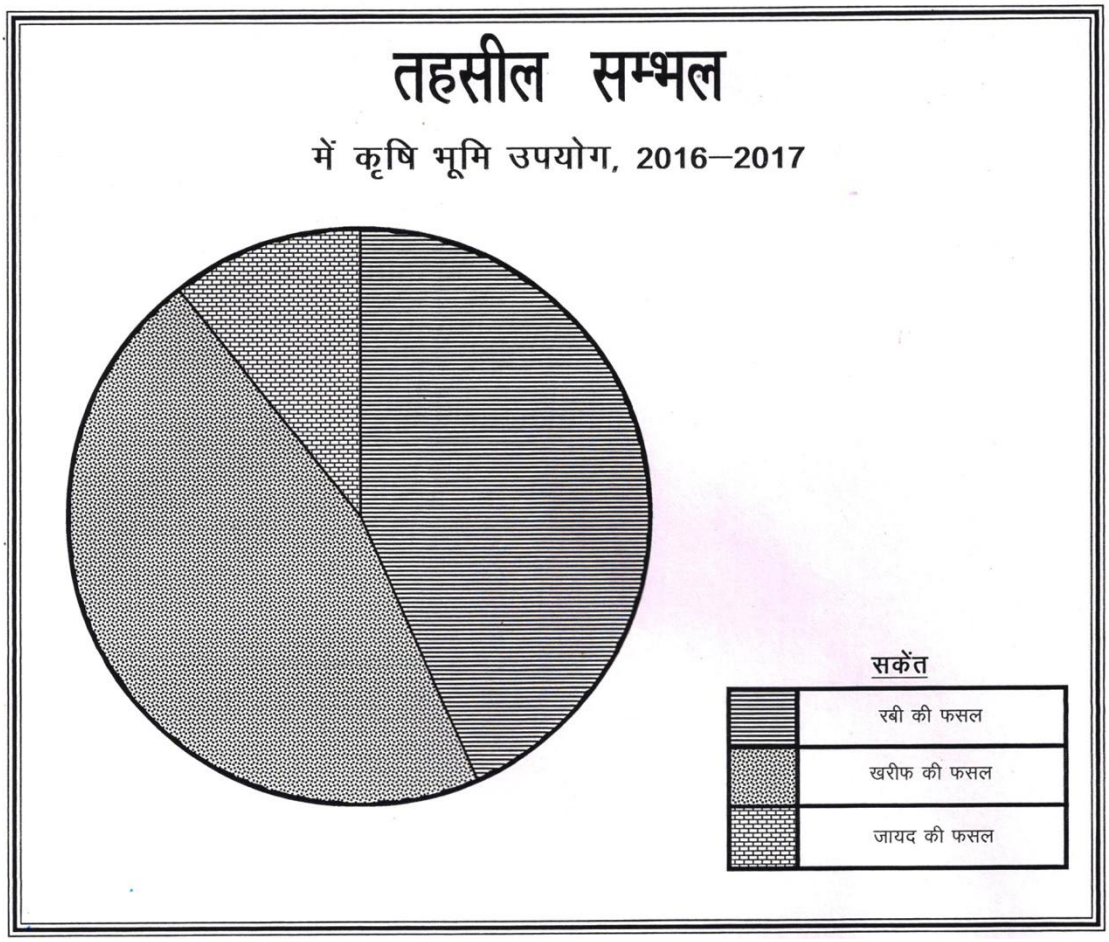

सिंचाईः

तहसील सम्भल में भूमि उपयोग के परिवर्तन में सिंचाई का विषेश योगदान है। कृशि के अन्तर्गत षुद्ध रूप से बोए गए क्षेत्रफल का 95.73 प्रतिषत भाग सिंचित है जिसमें सिंचाई साधनों का विषेश योगदान है। राजकीय नलकूपों की कुल संख्या 280 है जिनके माध्यम से 2.74 प्रतिषत क्षेत्रफल सींचा जाता है। निजी नलकूपों की संख्या 835 है जिनके द्वारा 17.85 प्रतिषत क्षेत्रफल सींचा जाता है। डीजल चालित पम्पिंग सैट्स के माध्यम से 71.60 प्रतिषत क्षेत्रफल सींचा जाता है जिनकी कुल संख्या 55140 है। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार के साधनों के द्वारा 7.81 प्रतिषत भाग सिंचित है जिनकी संख्या 1005 है। जैसा कि तालिका– से स्पश्ट है।

तालिका संख्या – 03

तहसील सम्भल में सिंचाई के साधन एवं सिंचित क्षेत्रफल, 2016–2017

क्र0 सं0	सिंचाई के साधन	संख्या	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	प्रतिषत
1–	राजकीय नलकूप	280	2170	2.74
2–	निजी नलकूप	835	14145	17.85
3–	डीजल चालित पम्पिंग सैट्स	55140	56730	71.60
4–	अन्य प्रकार के साधन	1005	6190	7.81

स्रोतः जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद सम्भल, 2017।

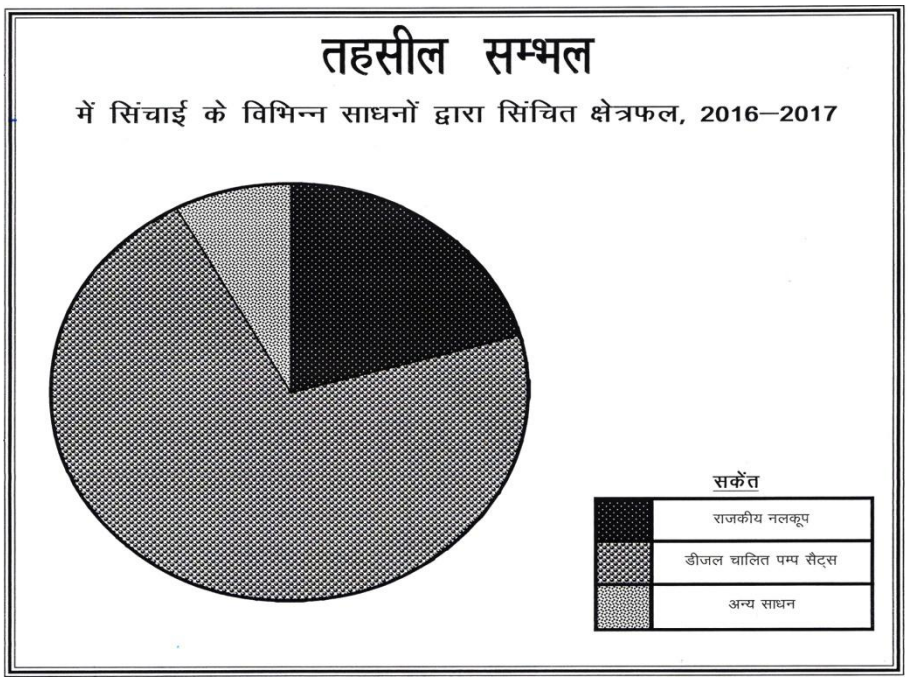

भूमि उपयोग की समस्यायेंः

तहसील सम्भल नदियों के अवसाद के निक्षेपण से निर्मित यह क्षेत्र उपजाऊ कांप मिट्टी की प्रबलता के परिणामस्वरूप कृशि आधारित क्षेत्र है। कृशि कार्य में यहॉ के भूमि उपयोग का महत्वपूर्ण स्थान है। भूमि उपयोग से सम्बन्धित समस्यायें निम्नवत है–

1. अध्ययन क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली नदियों के समीपवर्ती क्षेत्र में एवं निम्न भूमि के क्षेत्र में जल प्लावन की समस्या मुख्य है। तीव्र गति से वर्शा के फलस्वरूप जल की अधिकता के कारण भूमि का निरन्तर कटान होता रहता है जिसके फलस्वरूप कृशि कार्य बाधित रहता है।
2. अध्ययन क्षेत्र में मृदा कटान की समस्या मुख्य है। मृदा अपरदन की समस्या में निरन्तर बढ़ोत्तरी होने के परिणामस्वरूप भूमि उपयोग के स्वरूप में बदलाव दिखलाई पड़ रहा है। कृशि

क्षेत्र का अधिकांष भाग मृदा अपरदन से ग्रस्त होने के कारण फसल उत्पादन को भी प्रभावित हो रहा है।

3. कृशि भूमि, कृशि क्षेत्र का मूल आधार है। कृशि क्षेत्र में उन्नतषील बीज के प्रयोग की समस्या हैं। इसके साथ ही रासायनिक उर्वरकों के सन्तुलित प्रयोग की समस्या मुख्य रूप से विद्यमान है। कीटनाषक प्रयोग न होने के कारण कृशकों की अधिकांष उपज बेकार हो जाती है।

4. आज भी अध्ययन क्षेत्र में कृशि का अधिकांष भाग असिंचित है। सिंचाई साधनों में तीव्रतम वृद्धि होने के कारण भी सिचांई समस्या बनी रहती है। बढ़ती डीजल की कीमतें, विद्युत की आपूर्ति की समस्या वर्शा की अनियमितता एवं असमान वितरण के साथ–साथ गिरता भूजल स्तर मुख्य है।

5. कृशि क्षेत्र में बढ़ते तकनीकी प्रयोग के कारण आज भी मषीनीकरण की संख्या अपर्याप्त हैं कृशि का अधिकांष कार्य पुराने ढंग से ही सम्पादित किया जा रहा है।

भूमि उपयोग की समस्याओं से सम्बन्धित सुझावः

तहसील सम्भल एक कृशि प्रधान क्षेत्र है। कृशि यहॉ की जनसंख्या के रोजगार प्राप्ति का मुख्य आधार एवं आर्थिक विकास का मेरूदण्ड है। कृशि कार्य में भूमि उपयोग से सम्बन्धित अनेक समस्यायें मुख्य है। तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या की खाद्यान्न आवष्यकता हेतु भूमि उपयोग से सम्बन्धित समस्याओं का निराकरण आवष्यक है–

1. अध्ययन क्षेत्र में सकल प्रतिवेदित क्षेत्रफल के 0.72 प्रतिषत भाग पर वनों का विस्तार है। वनों के अन्तर्गत क्षेत्रफल में बढ़ोत्तरी किया जाना आवष्यक है। इसके लिए खेतों की मेड़ों एवं सड़क किनारे वृक्षारोपण किया जाना आवष्यक है।

2. तहसील सम्भल में कृश्य बेकार एवं ऊसर कृशि अयोग्य भूमि 760 हेक्टेयर हैं। तकनीकी साधनों के प्रयोग के बावजूद यदि प्रयास किये जाये तो यह क्षेत्र कृशि योग्य भूमि में परिवर्तित हो सकता है।

3. परती भूमि कृशि योग्य है। बाढ़ प्रभावित क्षेत्र तथा वर्शा के अभाव में खरीफ ऋतु में समय पर और आवष्यक सिंचाई सुविधा उपलब्ध न होने के कारण भूमि को खाली छोड़ दिया जाता है। सिंचाई साधनों एवं तकनीक के माध्यम से इस भूमि को कृशि क्षेत्र में परिवर्तित किया जा सकता है।

4. अध्ययन क्षेत्र में कृशि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में लाई गई भूमि 9.68 प्रतिषत है। तीव्र गति से बढ़ती हुई जनंसख्या के आधार पर भवन निर्माण एवं सड़कों के सीमित चौड़ीकरण पर विषेश ध्यान देने की जरूरत है।

5. अध्ययन क्षेत्र में कृशि भूमि 87.03 प्रतिषत है। जनसंख्या वृद्धि को ध्यान में रखकर अतिरिक्त खाद्यान्न आवष्यकता हेतु 1000 हेक्टेयर भूमि को कृशि भूमि में परिवर्तन किए जाने का प्रस्ताव है। इसके साथ ही साथ कृशि भूमि की अपर्याप्तता को दृश्टिगत रखते हुए न्याय पंचायत स्तर पर 20–20 लघु स्तरीय कृशकों का चयन कर सामूहिक कृशि फार्मो का चयन करना आवष्यक है।

सन्दर्भ

1 षर्मा, बी0एल0 : कृशि भूगोल, साहित्य भवन आगरा, 1988 पृश्ठ–296

2 सिंह, एम0 : लैण्ड यूटिलाईजेषन इन नार्थ–ईस्टर्न उत्तर– प्रदेष पी0–एच0डी0 थीसिज आगरा यूनिवर्सिटी, 1960

3 षफी, एम0 : लैण्ड यूटिलाईजेषन इन ईस्टर्न उत्तर–प्रदेष, ए0एम0यू0 अलीगढ़, 1960

4 भारद्वाज, एस0एस0 : पैटर्न आफ क्राप कानसेनट्रेटिन एण्ड डाईवरफिकेषन इन इण्डिया, इकोनामी ज्योग्राफी वाल्यूम

5 भारद्वाज, ओ0पी0 : लैण्ड यूज इन लोलैण्ड ऑफ सतलज– इन दि बिस्ट जुलेन्उर दोआब, नाट ज्योग्राफी जरनल ऑफ इण्डिया, वाल्यूम 7(4), 1961

6 सिहॅ, बी0वी0 : कृशि भूगोल, ज्ञानोदय प्रकाषन, गोरखपुर, 1996

7 गौतम, अलका : कृशि भूगोल, षारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2009, पृश्ठ–436

8 तिवारी आर0सी0 एवं सिंह बी0एन0 : कृशि भूगोल प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, 2010

9 जिला सामाजिक–आर्थिक विकास पुस्तिका जनपद सम्भल 2016।

10 जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद सम्भल 2017।